DR. B. N. SINGH
ASSOCIATE PROFESSOR
DEP. - PHILOSOPHY
SOGHRA COLLEGE
BIHAR SHARIF (NALANDA) PHILOSOPHY- Part I

Q Discuss in brief the Metaphysics of Charvaka.
(चार्वाक की तत्वमीमांसा की विवेचना करें)

Ans → चार्वाक की तत्वमीमांसा इनकी ज्ञान-मीमांसा (Epistemology) पर निर्भर है। इसके अनुसार प्रत्यक्ष ही यथार्थ ज्ञान का एकमात्र साधन है। इसलिए यह उन्हीं विषयों को वास्तविक मानते हैं जिनका प्रत्यक्षीकरण संभव है। प्रत्यक्ष केवल भौतिक पदार्थों का होता है। अतः चार्वाक के अनुसार भूत या जड़ ही मूल तत्व (ultimate reality) है। इसलिए इनके दर्शन को भौतिकवाद (Materialism) कहा जाता है।

किसी भी तत्वमीमांसा (Metaphysics) में मुख्यतः तीन विषयों पर विचार किया जाता है - विश्व (World or Nature), आत्मा (Soul) और ईश्वर (God)। चार्वाक - तत्वमीमांसा में भी इन तीनों विषयों पर विचार किया गया है। यहाँ इनपर अलग - अलग चार्वाक का मत प्रस्तुत किया जा रहा है।

चार्वाक का विश्व - संबंधी विचार

चार्वाक के अनुसार विश्व वास्तविक है, क्योंकि इसका प्रत्यक्ष हमें होता है। अब प्रश्न है - विश्व की उत्पत्ति किन तत्वों से हुई है? इस प्रश्न का भारतीय दर्शन में सामान्य उत्तर यह है कि पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, पवन, अग्नि और आकाश) से विश्व की सृष्टि हुई है। चार्वाक दर्शन इनमें केवल चार तत्वों को ही विश्व का निर्माणक तत्व नहीं मानता क्योंकि इसका प्रत्यक्ष ज्ञानेन्द्रियों द्वारा नहीं होता है। ये चार तत्व भौतिक हैं। इन्हीं तत्वों से सभी वस्तुएँ उत्पन्न हुई हैं इन तत्वों का विघटन होने से विश्व का नाश हो जाता है। प्राण (Life), चेतना (Consciousness) आदि भी अभौतिक तत्वों से ही उत्पन्न हुए हैं। इसलिए चार्वाक दर्शन भौतिकवादी कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

चार्वाक सृष्टिवाद (creationism) में विश्वास नहीं करता। यह विश्व के रचयिता के रूप से ईश्वर या किसी अन्य अलौकिक सत्ता को नहीं मानता। इसके अनुसार प्रकृति और प्राकृतिक नियम ही विश्व की उत्पत्ति की व्याख्या के लिए पर्याप्त है। इसलिए इस दर्शन को प्रकृतिवादी (Naturalistic) कहा जाता है। विश्व-प्रक्रिया में कोई प्रयोजन (Purpose) न मानने के कारण चार्वाकदर्शन यन्त्रवादी (Machanistic) दर्शन बन जाता है। यह दर्शन वस्तुवादी (Realistic) है, क्योंकि इसके अनुसार विश्व के पदार्थों का अस्तित्व ज्ञाता या अनुभवकर्ता पर आश्रित नहीं है।

चार्वाक का आत्मा संबंधी विचार - भारतीय दर्शन में साधारणतः आत्मा को शरीर से भिन्न एक आध्यात्मिक सत्ता माना जाता है। शरीर क्षणभंगुर है, किन्तु आत्मा नित्य, चिरस्थायी एवं अमर है। गीता में कहा गया है - जिस प्रकार व्यक्ति पुराने वस्त्र को छोड़कर नूतन वस्त्र पहनता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को त्यागकर दूसरा शरीर धारण करती है। आत्मा को न शस्त्र काट सकता है, न हवा सुखा सकती है, न पानी भिंगो सकता है, और न अग्नि जला सकती है। शंकर ने आत्मा को ब्रह्म ही घोषित कर दिया है। इस प्रकार भारतीय विचारकों के दृष्टि में आत्मा (soul) को अत्याधिक महत्व है।

चार्वाक आत्मा संबंधी परम्परागत विचार का खंडन करते हैं; इसके अनुसार शरीर से भिन्न नहीं है। चैतन्ययुक्त शरीर ही आत्मा ('चैतन्यविशिष्टदेहमेव आत्मा')। साधारणतः भारतीय विचारक चेतना को आत्मा का गुण या लक्षण बताते हैं। चार्वाक चैतन्य का अस्तित्व स्वीकार करते हैं, क्योंकि इसका ज्ञान आन्तरिक प्रत्यक्ष द्वारा होता है। किन्तु इनके अनुसार चैतन्य आत्मा का गुण न होकर शरीर का गुण है। यहाँ प्रश्न है कि भौतिक तत्वों से बने शरीर चेतना कहाँ से आती है, जब इन तत्वों में चेतना का पहले से अभाव रहता है।

चार्वाक इसका उत्तर एक उपमा की मदद से देते हैं। जिस प्रकार कसैली, चूना और पान में लाल रंग का अभाव है, किन्तु इन्हे साथ-साथ चबाने में लाल रंग की 'पीक' बन जाती है, ठीक उसी प्रकार भौतिक तत्वों में चेतना का अभाव रहने पर इसके संयोग से चेतना का उदय होता है।

चार्वाक आत्मा को शरीर से अभिन्न सिद्ध करने के लिए कई तर्क देते हैं—

(a) हम दैनिक जीवन मे पाते हैं कि अक्सर लोग कहा करते हैं, 'मैं अंधा हूँ', 'मैं मोटा हूँ', 'मैं काला हूँ' इत्यादि। ये कथन निश्चय ही आत्मा और शरीर का तादात्म्य (Identity) सिद्ध करते हैं। आत्मा को शरीर से पृथक मानने पर दैनिक जीवन के इन कथनों का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

(b) जन्म के पहले और मृत्यु के बाद शरीर से पृथक आत्मा के अस्तित्व का कोई आधार नहीं दीख पड़ता। जब तक शरीर जीवित है, तभी तक चेतना रहती है और शरीर छोड़कर आगे नहीं देखा। शरीर से अलग आत्मा का अस्तित्व प्रत्यक्ष के परे है इसलिए चार्वाक आत्मा को शरीर से अभिन्न मानते हैं।

चार्वाक आत्मा की अमरता का खंडन करते हैं। मृत्यु के बाद शरीर के साथ ही आत्मा भी नष्ट हो जाती है। आत्मा के नश्वर होने के कारण पुनर्जन्म का कोई प्रश्न नहीं उठता। मृत्यु के बाद आत्मा के स्वर्ग या नरक जाने की बात भी चार्वाक के अनुसार हास्यास्पद है। आत्मा के नश्वर सिद्ध हो जाने पर हवन, बलिदान, यज्ञ आदि धार्मिक कृत्यों का कोई महत्व नहीं रह जाता है।

इस प्रकार, चार्वाक आत्मा को चेतन शरीर का दूसरा नाम मानते हैं। यह आत्मा शरीर के समान ही नश्वर एवं क्षणभंगुर है।

Scanned with CamScanner

ईश्वर सम्बन्धी विचार - चार्वाक ईश्वर की सत्ता को नहीं मानते। ईश्वर का कभी प्रत्यक्ष नहीं होता इसलिए इसे वास्तविक नहीं माना जा सकता। ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करनेवाले प्रमुख तर्कों को चार्वाक खण्डन करते हैं.

चार्वाक के ईश्वर विरोधी तर्क

(a) ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन 'प्रत्यक्ष' है और इससे ईश्वर का ज्ञान नहीं होता। अतः ईश्वर का अस्तित्व ग्राह्य है।

(b) कभी-कभी ईश्वर का अस्तित्व अनुमान के आधार पर सिद्ध किया जाता है। वैशेषिक आदि दार्शनिक यह युक्ति देते हैं- "सभी कार्यों के कारण होते हैं। विश्व भी एक कार्य है, इसलिए इसका भी कोई कारण अवश्य है और वह कारण ईश्वर है।"

चार्वाक दर्शन निरीश्वरवादी है। ईश्वर का अस्तित्व न मानने के कारण इसके लिए ईश्वर को प्रसन्न रखनेवाले कार्यों - यज्ञ, तपस्या प्रार्थना, बलि आदि का कोई महत्व नहीं है।

चार्वाक तत्वमीमांसा की आलोचना:-

चार्वाक की तत्वमीमांसा दोषपूर्ण एवं एकांगी ज्ञानमीमांसा पर आधृत होने के कारण अमान्य है। इसके अनुसार प्रत्यक्ष ही ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन है। इसी के आधार पर इसने विश्व को भौतिक एवं प्रयोजनहीन बताया है, आत्मा की सत्ता एवं अमरता का खंडन किया है और ईश्वर के अस्तित्व का निषेध किया है। प्रत्यक्ष ही एकमात्र ज्ञान का साधन नहीं माना जा सकता।

इसी प्रकार, विश्वप्रक्रिया में प्रयोजन का भी ज्ञान हमें इन साधनों से होता है। अतः चार्वाक के विश्व आत्मा एवं ईश्वर से संबंध विचार दोषपूर्ण एवं आग्राह्य सिद्ध होते हैं।

Scanned with CamScanner